CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

शिक्षण–अधिगम में नवाचार : एक अध्ययन

डॉ. उमा सैनी
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा संकाय
आई.ए.एस.ई.(मानित) विश्वविद्यालय,
गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर
Email-yashgour2010@gmail.com, Mobile-9413121896

First draft received: 07.02.2026, Reviewed: 09.02.2026
Final proof received: 11.02.2026, Accepted: 15.02.2026

शोध सारांश

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में तीव्र परिवर्तन हो रहे हैं, जिनके कारण शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में नवाचार की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। इस शोध पत्र का उद्देश्य शिक्षण–अधिगम में नवाचार की अवधारणा, उसके प्रकार तथा उसके प्रभावों का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि पारंपरिक शिक्षण विधियाँ अब विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं कर पा रही हैं, इसलिए नवीन एवं छात्र–केंद्रित पद्धतियों को अपनाना आवश्यक है। शोध में विभिन्न नवाचारी विधियों जैसे– ई–लर्निंग, स्मार्ट क्लास, प्रोजेक्ट आधारित अधिगम, सहकारी अधिगम एवं गतिविधि–आधारित शिक्षण का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि नवाचार के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली, रोचक एवं सहभागितापूर्ण बनती है, जिससे विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, समालोचनात्मक चिंतन एवं समस्या समाधान कौशल का विकास होता है। अतः यह शोध पत्र यह दर्शाता है कि शिक्षण–अधिगम में नवाचार शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा इसे भविष्य की शिक्षा प्रणाली में व्यापक रूप से अपनाया जाना चाहिए।

मुख्य शब्द : *शिक्षण–अधिगम, नवाचार, शैक्षिक तकनीक, डिजिटल लर्निंग, समावेशी शिक्षा*

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति तथा सभ्यता और संस्कृति के उत्थान के लिए अत्यंत आवश्यक है इसके बिना किसी भी प्रकार के विकास की बात करना भी बेमानी है हमारा भारत देश एक विकासशील लोकतांत्रिक गणराज्य है जो विकास के लिए परिवर्तन के एक नाजुक दौड़ से गुजर रहा है ऐसे में वर्तमान भारतीय लोकतांत्रिक गणराज्य की सफलता और इसका संपूर्ण विकास शिक्षा के उन्नत स्तर तथा शिक्षा के क्षेत्र में नूतन प्रतिपादित हो रहे नवाचारों पर निर्भर करता है जनतांत्रिक देश भारत की सर्वोत्तमुखी उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि प्रारंभिक शिक्षा से शुरू होकर विश्वविद्यालय शिक्षा के पाठ्यक्रम में शिक्षण अधिगम हेतु विविध नवाचारों को निरंतर अपनाया जाए। शिक्षा समाज के विकास का मूल आधार है 21वीं सदी में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन आए हैं जिनमें नवाचार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है पारंपरिक शिक्षण विधियां की तुलना में आधुनिक नवाचारी विधियां अधिक प्रभावित सिद्ध हो रही है जिससे शिक्षार्थियों का बौद्धिक और रचनात्मक विकास संभव हो रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में शिक्षण अधिगम में नवाचार की अवधारणा और इसके विविध प्रकार तथा प्रभाव पर विस्तृत अध्ययन किया गया ।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व इस बात को दर्शाते हैं कि वर्तमान संदर्भ में शैक्षिक जगत में जहां नई शिक्षा नीति 2020 के आधार पर पाठ्यक्रम एवं शिक्षा व्यवस्था को सुसंगठित किया गया है ।इसी के अंतर्गत शिक्षा कैसे दी जाए ? यह भी एक ज्वलंत प्रश्न है। जिसका उत्तर शिक्षा जगत में हो रहे शिक्षण अधिगम के नवाचारों को शामिल करके प्राप्त किया जा सकता है। इसी आधार पर आज शिक्षा जगत में शिक्षण और अधिगम दोनों पक्षों में प्रतिपादित हो रहे नवाचारों को स्थान दिया जा रहा है। जिसके आधार पर भविष्य की संभावनाओं को प्राप्त किया जाएगा ।शिक्षण अधिगम में नवाचार केवल तकनीकी सुधार तक सीमित नहीं है ,बल्कि यह एक समग्र दृष्टिकोण है जो शिक्षा की गुणवत्ता और पहुंच में सुधार करता है। नवाचार से पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों में सुधार संभव है जिससे शिक्षार्थियों के सीखने की क्षमता और ज्ञानार्जन को बढ़ावा मिलता है।इसी के आधार पर बालकों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित होता है। इन्हीं बिंदुओं के आधार पर उक्त शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व को महसूस किया गया है तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा जगत में इस तरह के अध्ययन की आवश्यकता सार्थक है।

अध्ययन का औचित्य

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी ,रोचक और समकालीन बनाने के लिए नवाचार की आवश्यकता बढ़ती जा रही है ।पारंपरिक शिक्षण विधि जहां कुछ हद तक सफल हो रही है ,वहीं बदलते समय और तकनीकी विकास के साथ नई विधियों को अपनाना अनिवार्य हो गया है ।प्रस्तुत शोध समस्या काअध्ययन करने का औचित्य इन बातों पर निर्भर करता है कि नवाचार आधारित शिक्षण विधियां छात्रों की समझ और

व्यवहारिक ज्ञान को बेहतर बनाती है। छात्रों की सहभागिता को बढ़ाती है ।आधुनिक शिक्षण में स्मार्ट क्लास, ई – लर्निंग ,आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और वर्चुअल रियलिटी जैसी तकनीकों का उपयोग अनिवार्य हो गया है। नवाचार विशेष जरूरत वाले छात्रों के लिए भी शिक्षक को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाता है जिससे हर वर्ग के विद्यार्थियों को समान अवसर मिलते हैं। छात्रों में रचनात्मक और समस्या समाधान कौशल को विकसित किया जा सकता है। नवाचारों से शिक्षक की भूमिका में भी परिवर्तन दिखाई दे रहा है। आज वह छात्रों के मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर रहा है । उक्त शोध पत्र शिक्षण अधिगम में नवाचार की अवधारणा, उसके प्रभाव तथा भावी संभावनाओं का विश्लेषण करेगा ।यह शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों के उपयोग को बढ़ावा देने हेतु नीतिगत सुझाव भी प्रस्तुत करेगा। जिससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली और भविष्योन्मुख हो सके। इस संदर्भ में अध्ययन का औचित्य सार्थक सिद्ध होता है।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में दार्शनिक,वर्णनात्मक और पाठ्य पुस्तक विश्लेषण विधि द्वारा अध्ययन किया गया है

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध अध्ययन एनसीईआरटी द्वारा लिखित पुस्तक शिक्षा में नवाचार तथा विभिन्न शोध पत्र, ऑनलाइन स्त्रोत, पत्र पत्रिकाएं और अन्य पुस्तिकाओं तक सीमित रखा गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1.शिक्षण– अधिगम में नवाचार की अवधारणा का अध्ययन करना ।

2.शिक्षण– अधिगम में प्रमुख नवाचारी विधियों का अध्ययन करना ।

3.शिक्षण अधिगम में नवाचार से जुड़ी चुनौतियों का अध्ययन करना।

शिक्षण–अधिगम में नवाचार की अवधारणा का अध्ययन करना

शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर परिवर्तन और विकास के साथ ''नवाचार'' (Innovation) की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ अब विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरी तरह से पूरा नहीं कर पातीं, इसलिए शिक्षण–अधिगम में नए विचारों, तकनीकों और विधियों का समावेश आवश्यक हो गया है। इसी संदर्भ में "शिक्षण–अधिगम में नवाचार की अवधारणा का अध्ययन" शोध का एक प्रमुख उद्देश्य है।

नवाचार की अवधारणा

नवाचार का अर्थ है, कुछ नया करना, नई विधियों, तकनीकों या दृष्टिकोणों को अपनाना। शिक्षण–अधिगम के संदर्भ में नवाचार का तात्पर्य उन नवीन उपायों से है जो शिक्षा को अधिक प्रभावी, रोचक और छात्र–केंद्रित बनाते हैं।

शिक्षण–अधिगम में नवाचार की आवश्यकता

बदलते सामाजिक एवं तकनीकी परिवेश के अनुरूप शिक्षा को अद्यतन करना विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन और समस्या समाधान क्षमता विकसित करना पारंपरिक रटने की प्रवृत्ति को समाप्त करना शिक्षा को अधिक सहभागितापूर्ण और व्यावहारिक बनाना ।

नवाचार के प्रमुख आयाम

शिक्षण विधियों में नवाचार परियोजना पद्धति, समस्या समाधान पद्धति, सहयोगात्मक अधिगम, प्रौद्योगिकी का समावेश, स्मार्ट क्लास, ई–लर्निंग, ऑनलाइन प्लेटफार्म, डिजिटल सामग्री, वीडियो लेक्चर, इंटरैक्टिव ऐप्स, मूल्यांकन प्रणाली में नवाचार, सतत एवं समग्र मूल्यांकन, ओपन बुक परीक्षा, पोर्टफोलियो एवं प्रोजेक्ट आधारित मूल्यांकन, शिक्षार्थी–केंद्रित दृष्टिकोण, व्यक्तिगत भिन्नताओं का ध्यान सक्रिय सहभागिता, अनुभवात्मक अधिगम इत्यादि।

नवाचार के प्रभाव :–

शिक्षा अधिक रोचक और प्रभावशाली बनती है, विद्यार्थियों की भागीदारी बढ़ती है, सीखने के परिणाम बेहतर होते हैं और जीवन कौशलों का विकास होता है । शिक्षण–अधिगम में नवाचार आधुनिक शिक्षा की अनिवार्यता बन चुका है। यह न केवल शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है, बल्कि विद्यार्थियों को 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए भी तैयार करता है। अतः इस अवधारणा का गहन अध्ययन करना आवश्यक है, ताकि शिक्षा को अधिक गुणवत्तापूर्ण और सार्थक बनाया जा सके।

शिक्षण–अधिगम में प्रमुख नवाचारी विधियों का अध्ययन करना

नवाचारी शिक्षण विधियाँ वे नवीन एवं प्रभावशाली तरीके हैं, जिनके माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को अधिक रोचक, सहभागितापूर्ण एवं परिणामदायी बनाया जाता है। ये विधियाँ विद्यार्थियों को केवल ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं रखतीं, बल्कि उन्हें सोचने, समझने और लागू करने के लिए प्रेरित करती हैं।

प्रमुख नवाचारी शिक्षण विधियाँ

परियोजना पद्धति

इस विधि में विद्यार्थी किसी विषय या समस्या पर प्रोजेक्ट बनाकर सीखते हैं। अनुभव आधारित अधिगम, स्व–अध्ययन को बढ़ावा मिलता है तथा रचनात्मकता और समस्या समाधान क्षमता का विकास होता है।

समस्या समाधान विधि

विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की समस्याएँ देकर समाधान खोजने के लिए प्रेरित किया जाता है। तार्किक सोच और विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास होता है। निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि होती है।

सहयोगात्मक अधिगम

इसमें विद्यार्थी समूह में मिलकर कार्य करते हैं और एक–दूसरे से सीखते हैं। टीम वर्क, संवाद कौशल का विकास होता है। सामाजिक एवं भावनात्मक विकास होता है।

खोज आधारित अधिगम

विद्यार्थी स्वयं खोज करके ज्ञान प्राप्त करते हैं। जिज्ञासा और आत्मनिर्भरता का विकास होता है। दीर्घकालिक अधिगम सम्भव है।

अनुभवात्मक अधिगम

''Learning by Doing'' के सिद्धांत पर आधारित यह विधि वास्तविक अनुभवों के माध्यम से सीखने पर जोर देती है। व्यावहारिक ज्ञान तथा विषय की गहरी समझ होती है।

फ्लिप्ड क्लासरूम

इसमें विद्यार्थी घर पर वीडियो/सामग्री देखकर तैयारी करते हैं और कक्षा में चर्चा व गतिविधियाँ होती हैं। कक्षा में सक्रिय सहभागिता एवं समय का बेहतर उपयोग होता है।

ई–लर्निंग एवं डिजिटल शिक्षण

इंटरनेट और तकनीकी साधनों के माध्यम से शिक्षण किया जाता है। कहीं भी, कभी भी सीखना एवं संसाधनों की उपलब्धता और लचीलापन सम्भव है।

नवाचारी शिक्षण विधियाँ आधुनिक शिक्षा प्रणाली की रीढ़ बन चुकी हैं। ये विधियाँ न केवल शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाती हैं, बल्कि विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर, रचनात्मक और भविष्य के लिए सक्षम बनाती हैं। इसलिए शिक्षकों को चाहिए कि वे इन नवाचारी विधियों को अपनाकर शिक्षा को अधिक सार्थक एवं उपयोगी बनाया जा सकता है।

शिक्षण अधिगम में नवाचार से जुड़ी चुनौतियों का अध्ययन करना

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में नवाचार को अपनाना समय की मांग बन गया है, किन्तु इसके कार्यान्वयन में अनेक चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। "शिक्षण–अधिगम में प्रमुख नवाचारी चुनौतियों का अध्ययन" शोध का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है, क्योंकि इन चुनौतियों को समझे बिना नवाचार को सफलतापूर्वक लागू नहीं किया जा सकता । नवाचारी चुनौतियाँ वे बाधाएँ या कठिनाइयाँ हैं, जो शिक्षण–अधिगम में नई विधियों, तकनीकों और दृष्टिकोणों को अपनाने में सामने आती हैं। ये चुनौतियाँ शिक्षक, विद्यार्थी, संस्थान तथा संसाधनों से संबंधित हो सकती हैं।

शिक्षण–अधिगम में प्रमुख नवाचारी चुनौतियाँ

तकनीकी संसाधनों की कमी कई विद्यालयों में स्मार्ट क्लास, इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों की कमी होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल विभाजन एक बड़ी समस्या है। शिक्षकों का प्रशिक्षण अभाव है। सभी शिक्षक नई तकनीकों और नवाचारी विधियों में प्रशिक्षित नहीं होते। पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों से बाहर निकलने में कठिनाई होती है। मानसिकता एवं दृष्टिकोण की समस्या है। कुछ शिक्षक और अभिभावक नवाचार को अपनाने में संकोच करते हैं। परिवर्तन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण नवाचार को बाधित करता है। समय और पाठ्यक्रम का दबाव रहता है। विस्तृत पाठ्यक्रम के कारण शिक्षक नवाचारी गतिविधियों के लिए समय नहीं निकाल पाते। परीक्षा केंद्रित शिक्षा प्रणाली भी नवाचार को सीमित करती है। नवाचार के लिए आवश्यक संसाधन और तकनीक महंगे होते हैं। सभी संस्थान इनका खर्च वहन नहीं कर पाते। कक्षा में विद्यार्थियों की क्षमता, रुचि और पृष्ठभूमि अलग–अलग होती है। सभी के लिए एक ही नवाचारी विधि प्रभावी नहीं होती। पारंपरिक परीक्षा प्रणाली रटने पर आधारित होती है। नवाचारी अधिगम के परिणामों का सही मूल्यांकन करना कठिन होता है।

समाधान के उपाय

- शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण और कार्यशालाएँ।
- विद्यालयों में तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाना।
- लचीली और कौशल आधारित मूल्यांकन प्रणाली अपनाना।
- सरकार एवं संस्थानों द्वारा आर्थिक सहायता।
- सकारात्मक मानसिकता और नवाचार के प्रति जागरूकता बढ़ाना।

शिक्षण–अधिगम में नवाचार को सफल बनाने के लिए इन चुनौतियों का समाधान अत्यंत आवश्यक है। जब तक तकनीकी, मानसिक, आर्थिक और संरचनात्मक बाधाओं को दूर नहीं किया जाएगा, तब तक नवाचार का पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो सकेगा। अतः इन चुनौतियों का अध्ययन और समाधान शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

निष्कर्ष

शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया में नवाचार वर्तमान समय की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ अब विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं और बदलते सामाजिक–तकनीकी परिवेश को पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं कर पा रही हैं। इस संदर्भ में नवाचारी शिक्षण विधियाँ जैसे कि स्मार्ट क्लास, ई–लर्निंग, प्रोजेक्ट आधारित अधिगम, सहकारी अधिगम तथा गतिविधि–आधारित शिक्षण विद्यार्थियों को अधिक सक्रिय, रचनात्मक एवं आत्मनिर्भर बनाती हैं।

नवाचार के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया अधिक रोचक, प्रभावशाली एवं छात्र–केंद्रित बनती है। यह विद्यार्थियों में समालोचनात्मक चिंतन, समस्या–समाधान क्षमता तथा सृजनात्मकता का विकास करता है। साथ ही, शिक्षक की भूमिका भी केवल ज्ञान प्रदाता से बदलकर मार्गदर्शक एवं प्रेरक की हो जाती है। अतः यह स्पष्ट है कि शिक्षण–अधिगम में नवाचार न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाता है, बल्कि यह 21वीं सदी के कौशलों के विकास में भी सहायक है। भविष्य में शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक तकनीकी एवं व्यावहारिक नवाचारों को अपनाना आवश्यक होगा ताकि शिक्षा को अधिक समावेशी, प्रभावी और उपयोगी बनाया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Aggarwal, J.C. (2009). Principles, Methods and Techniques of Teaching. Vikas Publishing House.
2. Sharma, R.A. (2010). Shiksha ke Darshanik evam Samajshastriya Aadhar. R. Lall Book Depot.
3. Kumar, K. (2005). What is Worth Teaching\ Orient BlackSwan.
4. NCERT (2005). National Curriculum Framework (NCF 2005). New Delhi.
5. Pandey, K.P. (2012). Shikshan Vidhiyaan. Vinod Pustak Mandir.
6. Joyce, B., Weil, M., & Calhoun, E. (2015). Models of Teaching. Pearson Education.
7. UNESCO (2014). Innovative Teaching and Learning Practices. UNESCO Publishing.
8. MHRD (2020). National Education Policy (NEP 2020). Government of India.
9. Vygotsky, L.S. (1978). Mind in Society. Harvard University Press.
10. Piaget, J. (1970). Science of Education and the Psychology of the Child. Orion Press.